दया और प्रेम के गौरवमयी 100 साल

अजायब बानी

मासिक पत्रिका

फरवरी-2026

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका
अजायब ✿ बानी

वर्ष–तेइसवां	अंक–दसवां	फरवरी–2026

हुजूर कृपाल सिंह जी महाराज के शुभ जन्मदिवस 6 फरवरी पर सभी संगत को लख-लख बधाइयां

3 — परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
तीन सवाल

21 — सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
सतगुरु सोई हुई आत्माओं को जगाने के लिए आते हैं

31 — परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
संभाल

32 — सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी
धन्य अजायब

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **ज्योति सरदाना**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 287 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

तीन सवाल

21 जनवरी 1964 वाशिंगटन, डी.सी

***एक प्रेमी:** फ्रेंडस मीटिंग हाउस में आपने कहा था कि आपने अपने गुरुदेव से पूरे जीवन में तीन सवालों के अलावा और कोई सवाल नहीं पूछा। मुझे लगता है कि यह जानना बहुत दिलचस्प होगा कि वे **तीन सवाल** कौनसे थे जो आपने अपने गुरुदेव से पूछे थे?*

महाराज कृपाल सिंह जी: जब मैं अपने गुरुदेव बाबा सावन सिंह जी के चरणों में गया तो कुछ दिनों बाद ही मैंने उनसे पूछा कि क्या यह तरीका बिल्कुल सही है और यह आपके बाद भी रहेगा? बेशक यह बहुत ही असभ्य सवाल था लेकिन मैंने उनसे पूछा मुझे इसकी काबिलियत जानने में बहुत दिलचस्पी थी। हर किसी को अनुभव मिलता है और वे मार्ग पर इतनी तेजी से आगे बढ़ते हैं जिसके बारे में हम आमतौर पर बहुत कम जानते हैं। यह वह अंतिम चीज है जिसे हमें प्राप्त करना है लेकिन गुरु की दया यहाँ मौजूद है, वे नामदान के दिन ही इसे प्रदान कर देते हैं।

फिर उन्होंने कहा, ''मैं जिसका भी चुनाव करूंगा मैं उसका जिम्मेदार हूँ, मैं दूसरों के लिए जिम्मेदार नहीं हूँ और यह तरीका जारी रहेगा।'' स्वाभाविक रूप से ऐसा होता है कि जब कोई गुरु अपना भौतिक शरीर छोड़ते हैं तो बहुत से लोग उनके मार्ग को अपना लेते हैं, शायद वे यह सोचते हैं कि यह कमाई का मामला है।

फिर मैंने उनसे पूछा, ''वह किस रूप में होंगे?'' उन्होंने कहा कि वह सिख रूप में होंगे। कुछ लोग जो सिख रूप में नहीं थे, उन्होंने सिख रूप की नकल करना और उसे अपनाना शुरु कर दिया। मैंने उनसे विनती की, ''आप पहले ही दिन शुरु से आखिर तक पूरा नामदान दे देते हैं, क्या

यह बेहतर नहीं होगा कि आप एक–एक करके 'शब्द नाम' दें?'' फिर वे मेरी तरफ मुड़े और बोले, ''क्या तुम जानते हो कि यह विज्ञान पूरी तरह से क्यों भुला दिया गया है?''

उन्होंने फिर कहा, ''मान लो एक आदमी अपने गुरु के पास गया, उसने दो मंडलों और तीन मंडलों तक तरक्की की और गुरु ने शरीर छोड़ दिया। जिसका नतीजा यह हुआ कि उसने सोचा कि शायद यही आखिरी मंजिल है।'' कोई और अपने गुरु के पास गया उसने केवल दो मंडलों तक ही तरक्की की और गुरु ने शरीर छोड़ दिया तो उसने सोचा शायद यही आखिरी मंजिल है। तीसरा व्यक्ति अपने गुरु के पास गया और वह पहला मंडल ही पार कर सका, उसने सोचा शायद यही आखिरी मंजिल है।

फिर उन्होंने कहा, ''पूरी बात नामदान के दिन ही समझा दी जाती है और शुरुआत करने के लिए कुछ अनुभव भी दिया जाता है। चाहे शिष्य को बाद में गुरु के भौतिक शरीर को देखने का अवसर न मिले।''

ये वे **तीन सवाल** थे जो मैंने उनसे पूछे थे। बाकी सब कुछ मैंने उनके चरणों में चुपचाप बैठकर सीखा। आप देखें जब कोई आदमी एक्टर होता है तो वह जिंदगी के हर कदम पर एक्टिंग करता है चाहे वह घर पर रोटी खा रहा हो या बाहर रोटी खा रहा हो। अगर आप उसे देखते रहें तो आपको बहुत सी खूबसूरत चीजें दिखेंगी। हम वह खूबसूरती नहीं देख पाते क्योंकि हम उन्हीं चश्मों से देखने की कोशिश करते हैं जो हमने अपने लिए बनाए हैं अगर आप देखते रहेंगे तो आप जानेंगे।

आँखें आत्मा की खिड़कियां हैं, प्रकाश आँखों से और पूरे शरीर से निकलता है, जहाँ प्रकाश है आप वहाँ ध्यान दें। आप ग्रहणशील बनें तो आपको जीवन मिलेगा। शब्दों से आप जो माँगते हैं आपको वही मिलता है अगर आप इसे वैसे ही छोड़ देते हैं और शान्त रहते हैं तो आपको प्रकाश के दर्शन होंगे। यही वह चीज है जो इंसान सबसे ज्यादा सीखता है।

सन् 1955 में अमेरिका से लौटते हुए मैं बर्लिन गया, मैं जर्मन भाषा नहीं जानता था इसलिए मैंने एक दुभाषिया नियुक्त किया जो मैं अंग्रेजी में बोलता था वह उसका अनुवाद करता था। वहाँ बैठे हुए लोगों ने कहा, ''अरे जरा रूकिए। आप सही अनुवाद नहीं कर रहे, आपकी बातों से ज्यादा हम उनकी आँखों से समझ रहे हैं।''

ग्रहणशीलता जीवन प्रेरणा देती है। भले ही आप 'गरम' या 'ठंडा' शब्द न जानते हों फिर भी आप गर्मी और ठंडक को महसूस करेंगे। आपको गर्मी या ठंडा शब्दों का इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं बेशक यह ज्यादा अदभुत है। इसलिए कहा जाता है अगर आप गुरु के चरणों में एक घंटा या उससे अधिक समय तक पूरी तरह से ग्रहणशील अवस्था में बैठते हैं तो आपको चालीस साल या सौ साल तक दिमागी अंदाजा लगाने से अधिक लाभ प्राप्त होगा।

वहाँ आप बोलते और अंदाजा लगाते हैं तो आपको वहाँ वही मिलता है जिसका आपने अंदाजा लगाया है। जलती हुई और गर्मी देने वाली आग के बारे में सोचना अलग बात है, आग के पास बैठना अलग बात है। जब कोई बोलता है तो वह अपने पूरे दिल से बोलता है। अगर हवा आग की बड़ी लपटों के खिलाफ बह रही है और उसके दूसरी तरफ चली जाती है तो दूसरी तरफ बैठे व्यक्ति को गरम हवा महसूस होगी। इसी तरह अगर हवा किसी ऐसी जगह से गुजरती है जहाँ जमीन पर बर्फ है तो दूसरी तरफ बैठे लोगों को ठंडी हवा लगेगी। हवा वही है लेकिन सवाल यह है कि हवा किसके संपर्क में आई आग के या बर्फ के?

अगर दिल में परमात्मा और पूरी इंसानियत के लिए प्यार उमड़ रहा है तो उनके कहे हुए शब्द चार्ज हो जाएंगे। जो कोई भी उन शब्दों को सुनेगा वह ठीक उसी प्रभाव को ग्रहण करेगा अगर हृदय वासनाओं, बुरी सोच और हिंसा आदि से भरा हुआ है तो उनके द्वारा बोले गए कोई भी

शब्द उसी चीज से चार्ज होंगे, भले ही वह कितने मीठे शब्द क्यों न बोले, चार्जिंग दूसरी तरह ही होगी। जैसे अगर आपको किसी से प्यार है और वह कभी–कभी आपको गाली देता है या बुरे नाम से बुलाता है तो वे नाम भी आपको बहुत प्यारे लगते हैं।

यह बिल्कुल ऐसा है जैसे एक कमरे में बहुत खुशबूदार फूल रखे हैं तो उस कमरे में बैठा व्यक्ति सुगंध महसूस करेगा, फूलों से निकलने वाली खुशबू पूरे कमरे में फैल जाएगी। जो कोई भी परमात्मा की मस्ती में जीने वाले इंसान के दायरे में आएगा उस पर वही असर होगा। इसलिए कहा जाता है कि आध्यात्मिकता सिखाई नहीं जाती, ग्रहण की जाती है। इसे सिखाया नहीं जा सकता यह इंफेक्शन की तरह फैलती है। जिसके बारे में सभी गुरुओं ने और सभी धर्मग्रंथों ने यही कहा है।

क्राईस्ट ने कहा था, ''जहाँ एक से ज्यादा लोग मेरे नाम पर बैठते हैं, मैं वहीं हूँ।'' गुरु भले ही हजारों मील दूर हों अगर आप ग्रहणशील बन जाते हैं तो आपको उनका प्रकाश प्राप्त होगा। आप रेडियो या टेलिविजन के जरिए हजारों मील दूर से भी लोगों को बोलते हुए सुन सकते हैं इसी तरह अगर आप अपना चेहरा गुरु की ओर करेंगे तो आपको उनके दर्शन मिलेंगे।

एक बार किसी से पूछा गया कि भगवान कहाँ रहते हैं? तो उसने कहा कि अगर तुम्हें दवा चाहिए तो अस्पताल जाओ अगर तुम्हें विद्या प्राप्त करनी है तो स्कूल, कॉलेज ढूंढो। अगर आपको नमी चाहिए तो सुबह घास पर चलिए, वहाँ आपको पूरी नमी मिलेगी। अगर आप भगवान को ढूंढना चाहते हैं तो आपको वहाँ जाना चाहिए जहाँ ईश्वर निवास करते हैं।

मौलाना रूमी ने कहा किसी ने ईश्वर से पूछा, ''आप कहाँ रहते हैं?'' ईश्वर ने कहा, ''मैं इतना बड़ा हूँ कि मेरी सारी रचना मुझे समाहित करने के लिए काफी नहीं है लेकिन अजीब बात है कि मैं एक गुरु के हृदय में रहता हूँ अगर मुझे ढूंढना चाहते हो तो वहाँ जाओ।''

भगवान हर किसी के दिल में रहते हैं लेकिन दोनों में क्या फर्क है? एक के दिल में भगवान प्रकट हैं और दूसरे के दिल में प्रकट नहीं। भगवान को अपने अंदर प्रकट करने के लिए हमें अपना ध्यान बाहर की दुनिया से हटाना होगा। ऐसे जीवित व्यक्ति जिसके पोल पर परमात्मा की पावर प्रकट है, उसके पास बैठना बहुत बड़ा आर्शिवाद है।

एक हिन्दू धर्मग्रंथ कहता है कि आप धर्मग्रंथों को पढ़कर, तपस्या करके, उपवास रखकर, संयम का जीवन जीकर और अपनी इन्द्रियों को नियंत्रित करके उतनी जल्दी परमात्मा तक नहीं पहुँच सकते जितनी जल्दी आप एक गुरु के पास बैठकर परमात्मा के पास पहुँच सकते हैं। आप सुबह से रात तक धर्मग्रंथ पढ़ सकते हैं लेकिन आप उनका सही अर्थ तब तक नहीं जान सकते जब तक आप किसी अनुभवी व्यक्ति से नहीं मिलते।

धर्मग्रंथों को बुद्धि के लेवल पर समझने से आपको उनका सही अर्थ नहीं मिल सकता। इतनी सारी धर्म विचारधाराएं इसलिए हैं क्योंकि उनसे संबधित लोगों ने वह नहीं देखा जिसका वर्णन धर्मग्रंथ करते हैं। अगर उन्होंने देखा होता तो वे भी यही कहते। मैं कहता हूँ कि सभी धर्मों से परे एक धर्म है और वह है सत्य को देखने का धर्म। जिसे समय-समय पर आए सभी गुरुओं ने बताया। जिन्हें गुरुओं के चरणों में बैठने और सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त होता है, उन्हें वह सत्य मिल जाता है। जो लोग उनके कहे अनुसार जीवन जीते हैं, वे बहुत जल्दी तरक्की कर जाते हैं।

आप जानते हैं कि अरस्तू महान सिकंदर के गुरु थे, फिर भी अरस्तू सड़कों पर घूमकर ऐसे लोगों की तलाश करते जिन्हें वे पढ़ा सकें। एक दिन महान सिकंदर ने उनसे कहा, ''मैं महान सिकंदर आपका शिष्य हूँ, क्या मैं आपके लिए काफी नहीं?''अरस्तू ने कहा, ''यह ठीक है कि तुम मेरे शिष्य हो लेकिन तुम अरस्तू नहीं बन सकते। मैं किसी ऐसे इंसान को ढूंढ रहा हूँ जो अरस्तू बन सके, मैं चाहता हूँ कि वह मेरे जैसा बने।''

अपने गुरु जैसे वही हो सकते हैं जो गुरु की आज्ञा मानते हैं। शुरुआत वहीं से होती है, वे न सिर्फ हुक्म मानते हैं बल्कि उनके निर्देशों का भी पालन करते हैं। वे वही जीवन जीते हैं जो गुरु को पसंद है। वे गुरु की उपस्थिति या अनुपस्थिति में भी उसी तरह का जीवन जीते हैं। ऐसे लोग गुरु में समा जाते हैं, ऐसे लोगों की पहुँच गुरु तक होती है।

मुश्किल यह है कि हम हमेशा मन के कहे अनुसार चलते हैं, हम बाहरी तौर पर इन्द्रियों के साधारण सुखों को छोड़ नहीं पाते। भले ही हम अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे अंदर बहुत सारा धन, एक महान खजाना, एक अनमोल मोती मौजूद है। यह सब दिमागी तौर पर जानते हुए भी हम ऐसा करने की हिम्मत नहीं करते क्योंकि हम अंदर के खजाने से ज्यादा बाहर की चीजों से लगाव रखते हैं।

सब गुरु यही कहते आए हैं कि परमात्मा हर जगह है, बस उन्हें देखने के लिए हमारी अंदरूनी आँखें नहीं खुली। सबसे पहले जब हम अपने अंदर देखते हैं तो यह शरीर परमात्मा का मंदिर प्रतीत होता है। जब आँख बन जाती है तो हम देखते हैं कि संपूर्ण सृष्टि परमात्मा का मंदिर है। गुरु अमरदास जी कहते हैं, ''गुरु की दया से आप देखेंगे कि यह शरीर परमात्मा का मंदिर है क्योंकि परमात्मा आपके अंदर रहते हैं।''

भीख नाम के सन्त का एक शिष्य था। वह शिष्य हमेशा अपने गुरु के नाम को दोहराता था, ''या भीख, या भीख, या भीख।'' उसके लिए गुरु ही परमात्मा थे। सभी गुरु कहते हैं, ''बिना शब्द वाले परमात्मा ने शरीर धारण किया और हमारे बीच वास किया।'' जिनकी आँखें खुली हैं वे देखते हैं कि वही परमात्मा जो हमारे अंदर रहते हैं, वे शब्दहीन परमात्मा हैं जो हममें प्रकट हो रहे हैं।

मुसलमानों के राज्य में धार्मिक पाबदिंया बहुत सख्त थी। किसी इंसान को परमात्मा मानना धर्म के खिलाफ माना जाता था। किसी ने

भीख के उस शिष्य से पूछा, ''तुम्हारा परमात्मा कौन है?'' शिष्य ने कहा, ''भीख।'' फिर पूछा, ''तुम्हारा पैगम्बर कौन है?'' उस शिष्य ने फिर कहा, ''भीख।''

उन लोगों ने उस शिष्य को गिरफ्तार कर लिया और उसे यह सजा सुनाई कि उसे तय दिन फाँसी पर लटका दिया जाएगा। राजा ने मौत की सजा का आदेश दिया। शिष्य को राजा के सामने पेश किया गया और पूरे मामले की जाँच की गई। राजा ने उस शिष्य का चेहरा देखा तो उसकी आँखों में मस्ती थी। राजा ने कहा, ''इसे छोड़ दो।'' फिर राजा ने शिष्य से पूछा, ''तुम्हारा परमात्मा कौन है?'' शिष्य ने कहा, ''भीख।'' फिर पूछा, ''तुम्हारा पैगम्बर कौन है?'' शिष्य ने फिर कहा, ''भीख।'' तब राजा ने मंत्रियों को आदेश दिया, ''ठीक है, इसे छोड़ दो।''

सभी मंत्रियों ने कहा, ''हे राजा, आप क्या कर रहे हैं? इसे मारने की सजा सुनाई जा चुकी है। यह कहता है कि इसका गुरु ही परमात्मा है और पैगम्बर भी इसका गुरु ही है, इसका सब कुछ गुरु ही है।'' राजा ने कहा, ''इसे जाने दें।''

आखिरकार जो राजा बनाए जाते हैं, वे भी परमात्मा की देन होते हैं क्योंकि परमात्मा ने उन्हें कितने सारे बच्चों की जिम्मेदारी दी होती है। राजा ने उस शिष्य से कहा, ''सुनो, हमारे देश में बारिश की कमी है, चारों ओर भयंकर अकाल पड़ा हुआ है, क्या तुम अपने भीख से कहोगे कि हमारे लिए बारिश करवा दे।''

उस शिष्य ने कहा, ''ठीक है, मैं उनसे कहूँगा।'' यह उस व्यक्ति का सवाल है जिसे यह पूरा विश्वास है कि परमात्मा उसमें हैं। राजा ने उससे पूछा, ''ठीक है, तुम कब वापिस आओगे?'' उसने कहा, ''मैं परसों वापिस आऊंगा।'' राजा ने कहा, ''ठीक है।'' मंत्रियों ने कहा कि यह भाग जाएगा, वापिस नहीं आएगा। राजा ने कहा, ''कोई बात नहीं।''

अगले दिन इतनी बारिश हुई कि पूरा देश बारिश से सराबोर हो गया। तीसरे दिन वह शिष्य राजा के सामने पेश हुआ। राजा ने कहा, ''अपने भीख को धन्यवाद दो जिन्होंने हमारे लिए बारिश भेजी।'' फिर राजा ने शिष्य को उसके गुरु भीख के लिए जमीनें उपहार में देनी चाहीं क्योंकि जहाँ भी गुरु होते हैं, वहाँ बहुत से लोग लंगर और अन्य इंतजाम के लिए इकट्ठे होते हैं। जब राजा उसे लिखित देना चाहते थे तो शिष्य ने कहा, ''ओह, नहीं, नहीं, नहीं। मुझे यह नहीं चाहिए। यह तो नाशवान चीज हैं, आपको लगता है कि मैं इसे अविनाशी के पास ले जा सकता हूँ?''

जो लोग परमात्मा की भक्ति में मस्त होते हैं वे शारीरिक देह के रूप में परमात्मा के साथ नहीं बल्कि उसके अंदर रहने वाले परमात्मा के साथ एक हो जाते हैं। वह शिष्य जब अपने गुरु के पास गया तो भीख ने कहा, ''अरे पगले, जब तुमने एक चीज मांगी तो वह हो गई अगर तुमने मुझसे तुम्हें परमात्मा बनाने के लिए कहा होता तो मैं तुम्हें परमात्मा बना देता।''

इसलिए ध्यान रहे कि गुरु शरीर नहीं, परमात्मा की शक्ति हैं। आप इसे जिस भी नाम से बुलाना चाहें, यह अलग-अलग इंसानी पोल पर प्रकट हैं। कुछ लोगों ने परमात्मा से शिकायत की कि हम दुनिया के भौतिक संसार में भटक रहे हैं, आप हमारा मार्गदर्शन करने के लिए अपने दूतों को क्यों नहीं भेजते?

परमात्मा ने कहा, ''हाँ, मैंने उन्हें भेजा था। जब उन्होंने यह कहा कि वे परमात्मा हैं, परमात्मा और वे एक हैं। आप लोगों ने क्या किया? किसी को सूली पर चढ़ा दिया, किसी की खाल उतार दी, किसी को जलती हुई आग में डाल दिया। आप लोगों ने उनके साथ ऐसा बर्ताव किया।''

फिर मैंने ऐसे कुछ लोग भी भेजे जिन्होंने कहा, ''हम परमात्मा के सेवक हैं, यह उनकी दया है जो काम कर रही है, मैं तुम्हारे जैसा ही एक इंसान हूँ।'' और आप लोगों ने कहा, ''ओह, ये कुछ भी नहीं हैं। जब यह

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

खुद ही कहता है कि यह कुछ नहीं है तो हम इसकी बात क्यों सुनें?'' जिन्होंने कहा कि हम ईश्वर हैं, हम परमात्मा के बंदे हैं, हम एक हैं आप लोगों ने उन पर जुल्म किए, उनके साथ बुरा बर्ताव किया फिर भी मैंने ऐसे लोगों को तुम्हारे लेवल पर काम करने के लिए तुम्हें बताने के लिए भेजा कि मैं तुम्हारे जैसा एक इंसान हूँ। तुम भी इस तरह बन सकते हो।

जब समय आता है, जहाँ किसी को भूख होगी वहाँ उसके लिए खाना होगा, जहाँ किसी को प्यास होगी वहाँ उसके लिए पानी होगा। जब आग लगती है तो आक्सीजन मदद के लिए आती है। जब शिष्य तैयार होता है तो गुरु प्रकट होते हैं, वे पहले से ही काम कर रहे होते हैं। कुछ लोग उन्हें अलग–अलग नामों से पुकारते हैं और कुछ लोग उन्हें परमात्मा रूप में देखते हैं। स्वामी शिव दयाल जी के मामले में लोग उनके घर में जलती हुई लाईट को देखने की हिम्मत नहीं करते थे, उन्हें डर था कि उन पर असर पड़ेगा। हम लोग ऐसे ही हैं।

एक बार गुरु नानक देव जी यात्रा कर रहे थे और उन्हें गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। वहाँ उन्हें दूसरे कैदियों की तरह चक्की चलानी थी लेकिन वे परमात्मा को याद कर रहे थे और चक्की अपने आप ही चल रही थी। लोग हैरान थे, उन्होंने राजा को इसकी खबर दी। राजा ने उन्हें जेल से बाहर निकाल दिया।

अगर कोई व्यक्ति यह कहता है, ''मैं जानता हूँ।'' तो लोग कहते हैं कि यह कैसे हो सकता है? अगर वह कहता है, ''मैं सब कुछ परमात्मा की दया से करता हूँ, परमात्मा ही हैं जो सब काम कर रहे हैं।'' तो वे लोग सोचते हैं कि यह तो एक आम आदमी है और हम इससे बेहतर जानते हैं। अगर वह कहता है कि मैं परमात्मा हूँ तो वे लोग कहते हैं, ''यह तो विधर्मी है।'' तो इन लोगों से क्या कहा जाए?

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि दुनिया में जीना बहुत मुश्किल है अगर आप चुप रहते हैं तो लोग कहते हैं कि आपको बात करने की समझ नहीं। अगर आप उनसे बात करते हैं तो वे कहते हैं कि इसे बात करने की आदत है, इसे बात करने का जुनून है। अगर आप जाकर उनकी सेवा करते हैं तो वे कहते हैं कि इसके पीछे कोई न कोई मकसद जरूर होगा।

दुनिया का ऐसा हाल है फिर भी इन सबके बावजूद गुरु आगे बढ़ते रहते हैं। कुछ लोग ऐसे भी आते हैं जिन्हें परमात्मा भेजते हैं और उन्हें फायदा होता है। अगर आप चुपचाप बैठे रहते हैं तो वे कहते हैं कि यह तो एक आम आदमी है अगर आप कोई चमत्कार दिखाते हैं तो वे कहते हैं कि यह मंत्रमुग्ध करने वाला है। अगर लोग ऐसे हैं तो क्या किया जाए?

वास्तव में एक सन्त की महानता इस बात में है कि वह आपको शरीर की चेतना से ऊपर उठने का कुछ अनुभव दे सकते हैं लेकिन आपको मंत्रमुग्ध करके नहीं, आप इसे होश में अनुभव करें। वास्तव में ऐसे लोग बहुत कम हैं जो यह जानते हैं कि आध्यात्मिकता क्या है। कुछ लोग सिर्फ उन आत्माओं से संपर्क करना मानते हैं जो शरीर छोड़ चुकी हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि यह कुछ तरीकों से उनके अंदर रिद्धि-सिद्धि उत्पन्न करने में मदद करता है और उन्हें लगता है कि शायद यही आध्यात्मिकता है। इनमें से कुछ भी आध्यात्मिकता नहीं, आध्यात्मिकता पूरी तरह से अपने आपको जानने का एक विज्ञान है।

प्रकाश और धुन का सिद्धांत है कि जो आपकी आत्मा को उस लेवल तक ले जाए वह उस धुन को आपके अंदर प्रकट कर सके, वही सन्त है। जो आपकी आँखें बंद करने पर दिखने वाले अंधेरे के पर्दे को हटा सके और जोत प्रकट कर सके। यह एक सन्त के सच्चे मापदंड हैं। पहले के समय में ऐसे लोग बहुत कम थे और अब भी ऐसे लोग बहुत कम ही हैं।

जैसा मैंने आपको बताया कि सभी धर्मों से परे एक धर्म है, सभी रीति–रिवाजों, सिद्धान्तों और रस्मों से ऊपर वही सत्य है, उसे ही रहस्यवाद कहा जाता है। मनोविज्ञान और सभी दर्शन शास्त्रों में आपको कुछ परिकल्पना करनी पड़ती है लेकिन आपको उससे ऊपर उठना होता है। रहस्यवाद परमात्मा रूपी पावर के साथ सीधा संपर्क है जो प्रकाश और धुन का सिद्धान्त है। एक बार संपर्क स्थापित होने पर इसमें आपकी आत्मा को उस स्त्रोत तक खींचकर ले जाने की पावर होती है।

'द क्राउन आफ लाईफ' किताब सभी योगों और उनके दायरे को प्रस्तुत करती है और यह भी बताती है कि कैसे गुरु ने तरक्की की और योगों से ऊपर उठकर परमात्मा के साथ एक हो गए। योग के दूसरे तरीकों का अनुसरण करना बहुत मुश्किल है लेकिन इस तरह एक बच्चा भी अनुसरण कर सकता है। जो आपको सालों साल की तपस्या के बाद दूसरे तरीकों से मिलता है, वह आपको नामदान के समय पहले दिन ही मिल जाता है। इससे बड़ी रियायत और क्या हो सकती है? किसी ने एक बार मुझसे कहा, ''अगर यह रास्ता इतना आसान है तो हमें ऐसा आसान रास्ता नहीं चाहिए।''

खुशकिस्मती से परमात्मा की दया से आपको रास्ता मिल गया है, आप निश्चिंत रहें। जिसने आपको इस मार्ग पर डाला है, वे आपको कभी नहीं छोड़ेंगे। आप उन्हें छोड़ सकते हैं लेकिन वे आपको नहीं छोड़ेंगे। क्राईस्ट ने कहा है, ''मैं दुनिया के खत्म होने तक तुम्हें नहीं छोड़ूंगा।'' यही परमात्मा की पॉवर है, गुरु पॉवर है, यह पॉवर कभी नहीं मरती, इंसानी पोल बदलते हैं पर यह पॉवर जारी रहती है।

यह पॉवर बहुत ही रहस्यमय तरीके से काम करती है। जो लोग उसे शारीरिक रूप में नहीं जानते, उन्हें भी यह पॉवर शारीरिक रूप में मिलने से बहुत पहले दिखाई देती है। वे हैरान होकर सोचते हैं, ''ये कौन हैं?''

मैं अपने गुरु से शारीरिक रूप में मिलने से सात साल पहले ही उन्हें अंदर मिल चुका था। मैंने सोचा कि शायद ये गुरु नानक हैं। जब मैं शारीरिक रूप से उनके संपर्क में आया तो मैंने पाया कि ये वही व्यक्ति हैं।

अब भी ऐसा हो रहा है, मैं पाकिस्तान गया। वहाँ एक मुसलमान सूफी था जिसने तीन साल पहले अपने अंदर गुरु का स्वरूप देखा। वह सोच रहा था कि एक सिख मेरे सामने कैसे प्रकट हो सकता है, यह सब क्या है? उसने कभी सिख स्वरूप में विश्वास नहीं किया था फिर उसने नामदान लिया। आज भी आपको हर जगह ऐसे उदाहरण मिलेंगे। परमात्मा पॉवर कभी नहीं मरती, जो लोग उनकी देख–रेख में आए हैं, उन्हें चिंता करने की क्या जरूरत है? गुरु जो कहते हैं उन्हें वही करना है।

मैं आपको एक बात बताता हूँ अगर वे गुरु की आज्ञा का पालन करते हैं तो बहुत अच्छा है, वे तेजी से तरक्की करेंगे। जिन्होंने गुरु रूपी परमात्मा की इच्छा को अपनी इच्छा बना लिया है, वे बहुत अच्छी तरह से तरक्की करेंगे लेकिन जो ऐसा नहीं करते, तब भी गुरु उन्हें नहीं छोड़ेंगे। नाम या शब्द का बोया बीज मर नहीं सकता। अगर शिष्य बिल्कुल भी कुछ नहीं करता तो उसे इंसानी जामें में दुनिया में वापिस लौटना होगा, उससे नीचे नहीं क्योंकि यह बीज केवल इंसानी जामें में ही उग सकता है।

गुरु की सबसे पहली और सबसे ज्यादा यही इच्छा होती है कि जैसे ही किसी को अंदरूनी संपर्क दिया जाए वह उसी समय सच्चखंड चला जाए। जो मना करता है, उसे शुरुआत में ही गुरु खुल्ली छूट देते हैं लेकिन वह किसी तरह से उसे साम, दाम, दंड, भेद से ले जाएंगे, वे उसे छोड़ेंगे नहीं। उन्हें उसे ले जाना ही है।

हमारे सतगुरु ने एक बार कहा था, ''तुम मेरा कहना क्यों नहीं मानते, भजन–अभ्यास करते रहो। जैसे सिविल अवज्ञा में होता है क्या तुम चाहते हो कि तुम्हें जबरदस्ती ट्रक में भरकर ले जाया जाए। तुम खुद चलकर क्यों

नहीं जाते? गुरु तुम्हें ले जाएंगे, जिस समय तुम्हें ले जाना है। वह समय तय है लेकिन तुम क्यों चाहते हो कि तुम्हे घसीटकर ट्रकों में लादकर ले जाया जाए।'' वह पॉवर जो इंसानी पोल में प्रकट है, वह बचाती है। गुरु के शब्द परमात्मा के शब्द होते हैं, भले ही वे किसी इंसान के गले से निकलते हुए प्रतीत होते हैं।

इन्द्रमति एक महिला सन्त थी, वह कबीर साहब की शिष्या थी। वह जब तरक्की करके सच्चखंड पहुँची तो उन्होंने देखा कि कबीर ही सतपुरुष हैं। इन्द्रमति ने कहा, ''आपने मुझे बताया क्यों नहीं कि आप ही सतपुरुष हैं अगर आपने मुझे पहले बता दिया होता तो अच्छा होता।'' कबीर साहब ने कहा, ''अगर मैंने तुमसे कहा होता कि मैं ही सतपुरुष हूँ तो तुमने यकीन नहीं करना था।'' हर कोई दावा करता है कि मैं ही परमात्मा हूँ।

कौन हमें परमात्मा के बारे में बता सकता है? परमात्मा के समान कोई भाई नहीं, कोई बहन नहीं, कोई पिता नहीं, कोई माता नहीं। कौन उनके बारे में जानकारी दे सकता है। सिर्फ परमात्मा जो किसी इंसानी पोल पर प्रकट हैं, वही हमें यह जानकारी दे सकते हैं। यह समझने के लिए आपको रास्ता दिया गया है। आप खुद देखेंगे कि गुरु ऊपर के मंडलों पर मौजूद हैं। वह पॉवर काम करती है, मदद करती है, पूरी सुरक्षा प्रदान करती है और सारा मार्गदर्शन देती है।

एक बार किसी ने हमारे गुरु से पूछा, ''हम आपको क्या समझें?'' उन्होंने कहा, ''आप मुझे अपना भाई, पिता, दोस्त या टीचर समझें लेकिन मैं जो कहूँ उसे मानें। अगर शरीर छोड़ने के बाद तुम मुझे ऊपर के मंडलों में काम करते हुए पाओ तो तुम मुझे जो चाहे सो कह सकते हो।''

गुरु अपनी बात नहीं थोपते, वे बस वही कहते हैं जो सामान्य बुद्धि वाले लोगों को अच्छा लगे। अब समय बदल गया है लेकिन क्राईस्ट के समय में उन्होंने हमेशा कहा, ''सब कुछ बेचकर, सब कुछ छोड़कर मेरे

पीछे आओ।'' भगवान कृष्ण ने भी यही कहा था और पहले के समय में भी सन्तों ने यही कहा था लेकिन अब वे कहते हैं कि अपनी रोजी–रोटी कमाते हुए परिवार व बच्चों का पालन–पोषण करते हुए परमात्मा से प्रेम करें। दुनिया और अपने घर–बार को छोड़कर मेरे पीछे न आएं।

वे आपको नामदान के पहले दिन ही कुछ अंदरूनी अनुभव देने में सक्षम हैं। वे भजन–अभ्यास के लिए आपके समय में से सिर्फ तीन–चार घंटे चाहते हैं। इस पर भी हम कहते हैं कि हमारे पास समय नहीं है, वे क्या करें? आप जो कुछ अन्य तरीकों से इतनी तपस्या और इतने समय के बाद प्राप्त करते हैं वह आपको नामदान के पहले दिन ही मिल जाता है। अगर आप भजन–अभ्यास के लिए रोजाना दो या तीन घंटे नहीं निकाल सकते तो और क्या उम्मीद की जा सकती है?

आपको परमात्मा से कौन मिलवा सकता है? यह बहुत ही सामान्य बुद्धि की बात है, जब कोई उनके सामान है ही नहीं। कान को इधर से पकड़ें या उधर से पकड़ें बात एक ही है। कुछ लोग कहते हैं कि गुरु परमात्मा नहीं हो सकते। कुछ कहते हैं कि वे ईश्वर हैं, मैंने उन्हें देखा है। अभी–अभी आपको भीख के शिष्य का उदाहरण दिया जिसमें उसने कहा था कि भीख ही परमात्मा हैं। जैसा कि राय सालीग्राम ने कहा था, ''स्वामी जी ही सब कुछ हैं, वह शब्दहीन परमात्मा हैं जो इंसानी जामें में आए हैं।''

जो गुरु के मुखपात्र बन गए हैं, वे गुरुमुख कहलाते हैं। वे नहीं बोलते उनके अंदर गुरु बोलते हैं। सन्त पॉल ने कहा था, ''यह अब मैं नहीं हूँ बल्कि क्राईस्ट मुझमें रहते हैं।'' इसी तरह गुरुमुख अपने बारे में कुछ नहीं कहते। वह देखता है कि उसका गुरु ही उसके जरिए बोल रहा है, वह हर समय सचेत रहता है। वह देखता है कि गुरु का शरीर उसके अपने शरीर में फिट हो गया है। कभी–कभी वह शिष्य खुद को पूरी तरह भूल जाता है। यह प्रेम, भक्ति और समर्पण की चरम उपलब्धि है।

आप जैसा सोचते हैं, आप वैसे ही बन जाते हैं। हाफिज ने कहा था, ''मेरा नाम हाफिज है बेशक लोग मुझे हाफिज कहते हैं लेकिन अब मैं हाफिज नहीं रहा, मेरे गुरु मुझमें रहते हैं। लोग मुझे हाफिज कहते हैं लेकिन मैं अपने बारे में सब भूल चुका हूँ, क्या मैं कभी था भी?''

गुरु इंसानी रूप में परमात्मा हैं अगर आप इंसानी रूप में गुरु बन जाते हैं तो आप इंसानी रूप में परमात्मा हो जाएंगे। क्राईस्ट ने कहा है, ''अगर आप अपने उन भाईयों से प्यार नहीं करते जिन्हें आप देखते हैं तो आप उस परमात्मा से प्यार कैसे करेंगे जिसे आपने देखा नहीं?'' अगर आपकी आँखें खुली हैं तो आप देखेंगे कि वह इंसानी रूप में परमात्मा है। आप खुद को भूल जाएंगे, गुरुमुख शब्द का यही अर्थ है। यही वह आखिरी लक्ष्य है जिस तक हमने पहुँचना है। स्वाभाविक ही सभी लगाव खत्म हो जाएंगे।

वे कितने खुशकिस्मत हैं जिन्हें ऐसे गुरु के चरणों में बैठने का सौभाग्य मिला है। बस हुक्म मानना और भजन-अभ्यास के लिए समय निकालना है। लाखों साल बाद भी इस संसार की चीजें यहीं रहेंगी। यहाँ तक की दुनिया में आने पर हमारा शरीर जो हमारे साथ आता है लेकिन मौत के बाद वह भी हमारे साथ नहीं जाता तो हम दुनिया की बाकी चीजों की क्या उम्मीद कर सकते हैं क्या वे हमारे साथ जाएंगी? हमारे लिए पहले संसार है फिर परमात्मा। हम धन-दौलत और संसार के भक्त हैं, ये चीजें हमारे साथ कैसे जा सकती हैं।

आप शारीरिक और दिमागी तौर पर तैयार हो चुके हैं, आपको अपना ध्यान रखना होगा। इंसानी जामा संपूर्ण सृष्टि में सबसे ऊँचा है, यह परमात्मा को जानने का सुनहरी मौका है। आप शांत रहें और जानें कि आप भगवान हैं। हम अपने जीवन का सबसे बड़े हिस्सा सांसारिक चीजों पर ध्यान देने में खर्च कर देते हैं। इंसानी जामें पर ध्यान दें क्योंकि सिर्फ इंसान के शरीर में ही आप परमात्मा को जान सकते हैं।

यह गुजरने वाला दौर है, ज्यादा देर तक नहीं रहेगा। जिनके पास शरीर था, उन्हें इसे छोड़ना पड़ा और हमें भी यह शरीर छोड़ना पड़ेगा। हमेशा ध्यान रखें कि आपके आसपास के सभी लोग आपके साथ नहीं जाएंगे, कम से कम वे लोग आपके साथ जरूर साथ जाएंगे जो प्रेम और नामदान के रेशमी बंधन में एक साथ बंधे हुए हैं और शरीर छोड़ने के बाद भी वे साथ रहेंगे। यह एक ऐसा रिश्ता है जिसे तोड़ा नहीं जा सकता, इसे तोड़ने वाली कोई ताकत नहीं है।

हमारे गुरु एक उदाहरण दिया करते थे कि आप नदी पार कर रहे हैं, गुरु वह है जो नाव में सभी यात्रियों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं। कुछ लोग पहले से ही दूसरी तरफ हैं और बाकी लोग भी वहीं जाएंगे वे वहाँ भी साथ होंगे। यह परमात्मा की दया है कि जो परमात्मा रूपी इंसान गुरु या सन्त के जरिए आती है। यह हमें एक ऐसे रिश्ते से जोड़ती है जो मौत के बाद भी नहीं टूट सकता।

यह एक सच्चा रिश्ता है जिसमें परमात्मा रूपी गुरु ने हमें जोड़ा है, हम सब उस एक ही परमात्मा के दोस्त, साथी और प्रेमी हैं। इसका इंसान के शरीर से कोई फर्क नहीं पड़ता चाहे व्यक्ति का शरीर आदमी का हो चाहे औरत का हो। हमारी आत्मा का विवाह परमात्मा से होना है। धन्य है वह आत्मा जो परमात्मा से मिल जाती हैं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज DVD-545(3)

सतगुरु सोई हुई आत्माओं को जगाने के लिए आते हैं

03 फरवरी 1989 गुरु नानकदेव जी की बानी 16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

आपके आगे गुरु नानकदेव जी का शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला है। महात्मा संसार में समाज चलाने के लिए नहीं आते, न ही उनका मकसद किसी खास कौम की नींव डालना होता है। **सतगुरु सोई हुई आत्माओं को जगाने के लिए आते हैं**, उनका मकसद सोई हुई आत्माओं को प्रभु की भक्ति की तरफ लगा देना होता है। जिन आत्माओं का दरगाह में फैसला हो गया है कि ये बहुत देर तक चक्कर काट चुके हैं वही आत्माएं सन्तों के पास आती हैं।

सन्त–महात्मा परमपिता परमात्मा से मिलने के फायदे बताते हैं कि प्यारेयो, **परमात्मा ने आपके ऊपर बहुत उपकार किए हैं जो बयान नहीं किए जा सकते। आप उन उपकारों को भूलें नहीं। परमात्मा का धन्यवाद करने का और परमात्मा से माफी माँगने का एक ही तरीका है कि आप परमात्मा की भक्ति करें।**

महात्मा हमें बताते हैं कि सबसे पहले परमात्मा ने हमें इंसान का तन दिया है जिसमें आप रह रहे हैं लेकिन हम कितने नाशुक्रे हो जाते हैं कि जिसने इस तन को बनाया है, जो इस तन को चला रहा है, यह तन प्राप्त करके हम उस परमात्मा को भूल जाते हैं। हम सोचते हैं कि हम शरीर हैं, हमारी तरह कौन है, हमें कौन बनाने वाला है? प्यारेयो, यह एक भुलावा ही है। हमें कोई बनाने वाला और चलाने वाला भी है, हम शरीर नहीं, हम आत्मा हैं। आत्मा ही शरीर को हरकत देती है और यह चलता–फिरता है।

सबसे पहले अगर हम परमात्मा की रचना की तरफ ध्यान दें तो यह रचना बहुत अचरज है, प्रशंसा करने योग्य है। एक आदमी की दूसरे आदमी

से आँख नहीं मिलती, नाक नहीं मिलती, कान नहीं मिलते, शरीर का भारीपन या पतलापन नहीं मिलता। सारे ही इंसान हैं लेकिन आप देख लें कि परमात्मा किस तरह माँ के पेट के अंदर यह रचना रचता है।

फिर ठंडे दिल से सोचें वह कौन सी ताकत है जो सूँघ कर बताती है। हम नाक से सूँघते हैं, नाक सूँघने का यंत्र नहीं यह एक जरिया है, इसके पीछे सुगंध कोई और ताकत ले रही है। कान आवाज को सुनने का यंत्र नहीं, यह एक जरिया है, आवाज को सुनने वाली ताकत कोई और है। आप बहरे आदमी को देख सकते हैं, कान उसके भी होते हैं, उसका कोई ऐसा कर्म हुआ होता है कि कान होने के बावजूद उसे सुनाई नहीं देता, उसका सुनने का जरिया बंद होता है वह मालिक ही करता है। आँखे सबमें है लेकिन वह रोशनी देखने वाली ताकत इन आँखों के पीछे है। मानना पड़ेगा कि इसके पीछे कोई प्रभु परमात्मा है। जीभ है, जब मौत आती है तो जीभ उस वक्त भी मुँह के अंदर होती है लेकिन यह कोई खट्टा-मीठा स्वाद नहीं चख सकती। रसना के ऊपर बैठकर कौन स्वाद लेता है?

प्यारेयो, मानना पड़ेगा कि वह प्रभु परमात्मा ही हमारे शरीर के अंदर बैठकर सारा इंतजाम कर रहे हैं, हमारी संभाल कर रहे हैं और सब चीजों का ज्ञान करवा रहे हैं। त्वचा है लेकिन जब मौत आती है, चमड़ी उस वक्त भी होती है बेशक इस पर छूरे मारते जाएं, इसे कोई दर्द नहीं होता। परमात्मा की ताकत होने की वजह से यह शरीर गर्मी-सर्दी महसूस करता है, पीड़ा भी महसूस करता है।

प्यारेयो, कहना ही पड़ेगा कि वह परमात्मा है, सन्तों ने उस परमात्मा को काम करते हुए देखा होता है। वह हमें विश्वास दिलवाते हैं कि आप इस ताकत से अंजान न हों। आप इस ताकत का अहसान भक्ति के बिना किसी भी तरीके से नहीं चुका सकते। वह ताकत आपकी इतनी देखभाल करती है, आपके अंदर इतनी कीमती ताकत उस परमात्मा ने ही दी है।

प्यारेयो, परमात्मा हर एक को रोजी देता है, वह पापी या पुन्नी नहीं देखता, किसी की रोजी नहीं टालता। वह पत्थर, आकाश, पानी और धरती के जीवों को भी रोजी देता है। वह रोजी देते हुए यह भी नहीं देखता कि यह रोजी के लायक है भी या नहीं। महात्मा के समझाने के अपने –अपने तरीके होते हैं।

महात्मा किसी के साथ बहस नहीं करते कि यह सच है या झूठ है। महात्मा का मकसद होता है कि महापुरुषों ने जो कहानियां लिखी हैं, उससे हमें शिक्षा मिले। मूसा पैगम्बर की कहानी आती है, मूसा पैगम्बर ने देखा कि परमात्मा हर एक को रोजी देते हुए थक जाता होगा, क्यों न मैं कभी–कभी इस ड्यूटी को संभाल लूं। मूसा ने खुदा के आगे विनती की कि महाराज जी, मैं आपका सेवक हूँ, आप यह काम मुझे दें।

खुदा ने कहा, ''देख भई मूसा, यह काम तो मेरे ही करने का है, मुझे कोई थकावट नहीं, मेरे नियम ही इस किस्म के बने हुए हैं कि वक्त पर मौत–पैदाईश होती है, वक्त पर रोजी मिलती है।'' मूसा ने कहा कि मैं आपका सच्चा सेवक हूँ, आप मुझे यह मौका जरूर दें। खुदा ने एक दिन मूसा से कहा, ''अच्छा भई प्यारेया, आज तू सबको रोजी दे।'' मूसा ने सबको रोजी दी लेकिन एक आदमी को नहीं दी क्योंकि मूसा ने उसकी बुरी हरकत देखी थी। उसकी यह हरकत थी कि वह मरी हुई औरत को कब्र में से निकालकर उसके साथ शारीरिक संबंध बना रहा था। मूसा ने कहा कि यह तो बहुत बुरा आदमी है, ऐसे आदमी को रोजी नहीं देनी चाहिए, यह रोजी के लायक नहीं।

शाम को जब मूसा अभ्यास में बैठा, अंदर गया। तब खुदा ने मूसा से पूछा कि क्या सबको रोजी–रोटी दे दी है? मूसा ने कहा कि हाँ जी, मैंने सबको रोजी दे दी, एक आदमी को नहीं दी। उसके अंदर यह नुख्स था, वह तो बहुत बुरा आदमी था। खुदा ने कहा, ''मूसा तुझमें और मुझमें यही

फर्क है कि तू भेदभाव रखता है अगर कोई बुराई करता है तो वह अपने लिए करता है। वह बुरा कर्म बनाता है जो उसे खुद ही भोगना पड़ेगा। मेरा काम तो रोजी देना है चाहे कोई पापी है या पुन्नी है।''

गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं कि परमात्मा की सबसे बड़ी सिफत यही है कि वह किसी की रोजी नहीं टालता। सन्त जब भी आते हैं, वे भूली हुई आत्माओं को प्रभु की भक्ति की तरफ प्रेरित कर जाते हैं। वे अपनी सूक्ष्म बुद्धि से हमें इस तरह समझाते हैं कि हमारी खोज शुरु हो जाती है, हमें नाम के रास्ते पर डाल देते हैं, नाम दे देते हैं।

नानक तुलीअहि तोल जे जीउ पिछे पाईऐ।।
इकसु न पुजहि बोल जे पूरे पूरा करि मिलै।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि आप अपनी तरफ देखें और दूसरी तरफ परमात्मा को रख दें। आपके ऊपर परमात्मा के गुण बहुत भारी हैं, परमात्मा ने हमारे ऊपर बहुत अहसान किए हैं। आपका कोई ऐसा बोल नहीं जो आप पढ़कर कविता द्वारा अच्छी आवाज से उसका धन्यवाद कर लें। उस परमात्मा तक एक बोल भी नहीं पहुँच सकता। उसकी आवाज सुनने का साधन सिर्फ 'शब्द–नाम' की कमाई है और अपनी आवाज सुनाने का साधन सिर्फ सिमरन करना है। नौं द्वारों में से ख्याल को आँखों के पीछे पहुँचाना है, जहाँ दाता दान कर रहा है, जहाँ उसकी आवाज आ रही है।

वडा आखणु भारा तोलु।। होर हउली मती हउले बोल।।

आप कहते हैं कि परमात्मा की महिमा, परमात्मा की दया, परमात्मा के प्यार को सिर्फ सन्त–महात्मा ही समझते हैं। वह उसे बड़े से भी बड़ा कहकर बयान करते हैं। वे कहते हैं कि जिस तरह इस दुनिया में राजा–महाराजा भी बड़े हैं क्योंकि दुनिया की हुकूमत उनके हाथ में होती है लेकिन गुरु अर्जनदेव जी महाराज कहते हैंः

तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई।

अगर हम आपको बादशाह के बादशाह भी कह दें फिर भी आप जो कुछ हैं सो हैं, आप सबके दाता हैं, सबको जीवन दे रहे हैं। बादशाह को भी आपने ही जीवन दिया है, उनकी जिंदगी की डोरी भी आपके हाथ में हैं। महाराज कृपाल कहा करते थे कि पेट प्रचारकों की मत हल्की होती है, उनके बोल हल्के होते हैं, वे पेट के लिए ही बोलते हैं। महात्मा के बोल निस्वार्थ होते हैं। वे जो कुछ बोलते हैं, पराए भले के लिए ही बोलते हैं। जिस तरह पपीहा सिर्फ स्वाति बूँद के लिए ही अपनी चोंच खोलता है इसी तरह महात्मा सतसंग के जरिए जो कुछ भी बोलते हैं, उनके दिल के अंदर हमारी बेहतरी होती है। महात्मा नाम में रंगे होते हैं, परमात्मा ने उनके दिल में हमारे लिए बहुत दया रखी होती है।

धरती पाणी परवत भारु।। किउ कंडै तोलै सुनिआरु।।

आप कहते हैं कि महात्मा के अंदर धरती का गुण मौजूद होता है, उन्होंने धरती की तरह क्षमा धारण की होती है। चाहे कोई धरती के ऊपर बिष्टा डाले, कोई धरती को खोदे, कोई धरती पर चंदन से लेप करे, धरती किसी का बुरा नहीं मानती। महात्मा पर्वत की तरह स्थिर होते हैं, वे अपने ख्याल को परमात्मा की भक्ति के बिना इधर–उधर डोलने नहीं देते और न ही अपने प्यारे बच्चों को डोलने की सलाह देते हैं।

महात्मा के अंदर पानी की तरह शीतलता होती है और जो उनकी सोहबत–संगत में आते हैं, वे सबको शीतलता और प्यार देते हैं, मन को शान्ति देते हैं। जो वस्तु पानी, धरती या पहाड़ की तरह भारी है, उसे सुनार तराजू पर रत्तियों से कैसे तोल सकता है क्योंकि सुनार का तराजू बहुत छोटा होता है। बाहरमुखी लोग महात्मा का अंदाजा किस तरह लगा सकते हैं कि महात्मा किस देश से आते हैं और उनके अंदर जीवों के लिए कितनी हमदर्दी है।

जब सूफी सन्त बुल्लेशाह अंदर गए तब अंदर पहुँची हुई आत्माओं ने उनसे पूछा, ''वहाँ तुझे कितने लोगों ने पहचाना, तेरी हमदर्दी कितने लोगों ने ग्रहण की?'' बुल्लेशाह ने हँसकर कहाः

बुल्लया साडा आत्थे वासा, जित्थे बहुते अन्ने।
ना साडी कोई कद्र पछाणें, ना सानूं कोई मन्ने।।

हम जिस महात्मा गुरु नानकदेव जी की बानी पढ़ते हैं, आज बहुत लोग इन्हें परमात्मा रूप समझकर मानते हैं लेकिन जब ये संसार में आए थे तो उस वक्त के समाजिक लोगों ने इनकी बहुत विरोधता की थी। वे लोग कहते थे कि ये कुराहिया है, अच्छी मत ही नहीं देता।

तोला मासा रतक पाइि।। नानक पुछिआ देइि पुजाइि।।

आप कहते हैं कि वेद तोला हैं, शास्त्र मासा हैं और स्म्रितियां रतक हैं। इन्हें पढ़ने वाले महात्मा का क्या अंदाजा लगा सकते हैं कि महात्मा के अंदर कौन सी ताकत काम करती है, महात्मा की पहुँच कहाँ तक है। तुलसी साहब कहते हैंः

जे को कहे सन्त को चीन्हा, तुलसी हाथ कान पे दीन्हा।।

मैं अपने कानों पर हाथ लगाता हूँ अगर कोई यह कहे कि मैंने सन्त का भेद प्राप्त कर लिया है। गुरु अर्जनदेव जी महाराज कहते हैंः

साध की महिमा बेद न जानहि।

वेद ब्रह्म तक बयान करते हैं और सन्तों का बयान सतलोक का है। सन्त अपने सेवकों की डोरी बहुत ऊँची बाँधते हैं।

जब मैं शुरु-शुरु में दिल्ली गया। दिल्ली में बहुत से लोग सिर्फ बहस करने के लिए मुझसे मिलने आते कि हम बहुत सयाने हैं, पढ़े-लिखे हैं। यह अच्छा पढ़ा-लिखा नहीं। उन्होंने काफी किस्म की बातें की। सबसे पहले तो उन्होंने कहा कि यह गाँव का आदमी है, जमीन के नीचे बैठा

रहा है। उन्होंने मुझसे कहा कि ठंडे दिल से सोचें, अंग्रेज आपको बेच देंगे। इनसे रब भी डरता है, आप सोचकर इनके मुल्क में जाएं। मैं चुप रहा।

मैंने यह बात रसल प्रकिन्स से की और कहा कि मुझे परमात्मा कृपाल ने आपके हाथ में दे दिया है। मुझे लोग इस तरह डराते हैं लेकिन मैं डरता नहीं हूँ। रसल ने कहा कि हाँ, हम आपको बेच भी देंगे, हमसे रब भी डरता है, हम आपसे झूठ क्यों बोलें। यह तो आपके ऊपर निर्भर है कि आप हमें क्या समझते हैं। मैंने कहा कि मैं आपके प्यार की बहुत कद्र करता हूँ। मैं सिर्फ तुम्हें बताना चाहता हूँ कि लोग मेरे पास आकर कैसी–कैसी बातें करते हैं। वे लोग वेद–शास्त्र के अलावा कोई बात नहीं करते थे सिर्फ यह कहते कि फलानी किताब के फलाने पन्ने पर यह लिखा है।

मैं उन लोगों से कहा करता था कि आपका अपना भी कोई तर्जुबा है तो वह मुझे बताएं? मुझे अंदर जाकर शान्ति आई है, सब किताबें छह फुट के शरीर में से निकली हैं, इसका लेखक इंसान है। क्या इस शरीर को समझ लिया है? हम बैठकर जितनी चाहे बातें कर लेते हैं अगर तुम अंदर जाते हो तो मैं तुम्हारे चरनों को हाथ लगाने के लिए तैयार हूँ। प्यारेयो, लेकिन मुझे ऐसा कोई आदमी नहीं मिला जो यह तसल्ली करवा दे कि वह वास्तव में ही अंदर जाता है। अब आप अंदाजा लगा सकते हैं कि वेद–शास्त्र पढ़ने वाले सन्तों का क्या अंदाजा लगाएंगे?

मूरख अंधिआ अंधी धातु।। कहि कहि कहणु कहाइिनि आपु।।

ये लोग मूर्ख और अंधे हैं, इनकी दौड़ छोटी है। ये लोगों की लेखनियां पढ़–पढ़कर सुनाते हैं लोगों को रिझाते हैं। बहुत सारे प्रचारक खुद भी बानी नहीं पढ़ते, बानी पढ़ने वाले किराए पर रख लेते हैं। महाराज कृपाल इन्हें पेट प्रचारक कहा करते थे। वे आप नहीं कहते तो उनसे कहलवाते हैं कि हम इतने बड़े प्रचारक हैं। उनकी कोई दौड़ नहीं, कोई उड़ान नहीं कि वे परमात्मा के दरबार में जाते हैं।

आखणि अउखा सुनणि अउखा आखि न जापी आखि।।

जब गुरु नानकदेव जी यात्रा करके कई साल बाद घर वापिस आए तो उनकी माता ने पूछा बेटा, ''नाम किस तरह लेते हैं, वह कितना आसान है?'' आपको पता है कि बिछोड़े का दर्द वही जानता है जिसे बिछोड़ा हुआ हो। तंदरूस्त को रोग का क्या पता है, रोग का दुख तो बीमार से पूछ सकते हैं? गुरु नानकदेव जी को पता था कि नाम जपना कितना मुश्किल है क्योंकि उन्होंने भूख-प्यास झेली थी, ग्यारह साल कंकड़-पत्थरों का बिछौना किया था। गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''माता, आपको क्या बताऊं कि नाम जपना कितना मुश्किल है, शुरु-शुरु में तकलीफ महसूस होती है क्योंकि आदत नहीं बनी होती। फिर लोगों के बीच जाकर इसका प्रचार करना भी मुश्किल है। हम कुछ भी नहीं कर सकते क्योंकि परमात्मा जैसे कहते हैं, हम जाकर उनका संदेश लोगों को देते हैं।''

इकि आखि आखहि सबदु भाखहि अरध उरध दिनु राति।।

आप कहते हैं कि इसमें बड़ा भेद है कि एक कमाई करके और आँखों से देखकर उस नाम की महिमा करते हैं, नाम के फायदे बताते हैं और एक सुना सुनाया कहते हैं। जो देखकर और नाम की कमाई करके जब किसी को नाम देते हैं तो उसके पीछे उनका तप-त्याग काम करता है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''थ्योरी हर व्यक्ति समझा सकता है, कई अच्छे तरीके से भी समझा देते हैं लेकिन थ्योरी समझा देनी कोई और बात है। लड्डुओं की बात करनी और है, खाने का स्वाद कुछ और होता है।''

जे किहु होइि त किहु दिसै जापै रूपु न जाति।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि परमात्मा की कोई जाति नहीं, उनका कोई वजूद नहीं जो गाने वाले लोग बता दें कि परमात्मा फलानी जाति के हैं। वह रूप, रेख, वर्ण सबसे बाहर हैं, वह अविनाशी हैं। उस स्वरूप को

सिर्फ वही महात्मा बता सकते हैं जो परमात्मा से मिल चुके हैं। परमात्मा धन्य हैं जो ऐसे महात्मा को संसार में भेजते हैं। वे जीव भी धन्य हैं जो ऐसे महात्मा के पास जाकर नाम ग्रहण करते हैं।

सभि कारण करता करे घट अउघट घट थापि।।

सब घटों में उस परमात्मा की ताकत काम करती है। जो कुछ इस दुनिया में दिखाई दे रहा है, यह सब कुछ परमात्मा का बनाया हुआ है और परमात्मा के आसरे चल रहा है।

आखणि अउखा नानका आखि न जापै आखि।।
नाइि सुणिअै मनु रहसीअै नामे साँति आई।।

आप नाम जपने की महिमा बयान करते हैं, उसके फायदे बयान करते हैं कि नाम की कमाई के क्या फायदे हैं? जो मन हिरन की तरह भटक रहा है इसे कोई तृप्ति नहीं, नाम जपने से शान्ति आ जाती है और मन को तृप्ति आ जाती है। सिमरन के जरिए नौ द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आना है। इस जगह वह धुन जो खंडों–ब्रह्मांडों को बना रही है, धुनकारें दे रही है, आपने उस आवाज को सुनना है।

नाइि सुणिअै मनु तृपतीअै सभ दुख गवाई।।
नाइि सुणिअै नाउ ऊपजै नामे वडिआई।।
नामे ही सभ जाति पति नामे गति पाई।।
गुरमुखि नामु धिआईअै नानक लिव लाई।।

गुरु साहब ने हमें प्यार से बता दिया कि नाम ही हमारी जाति है, नाम ही हमारी पत है। हम जब रोज–रोज उस 'शब्द धुन' को सुनते हैं तो हम भी नाम रूप हो जाते हैं। नाम की महिमा गुरुमुख महात्माओं को ही पता है।

इसलिए हमारा भी फर्ज बनता है कि हम नाम की कमाई करें। उठते-बैठते, चलते-फिरते हमेशा ही किसी चीज को याद करने से उसका रूप हो जाते हैं। रोज-रोज उस शब्द धुन को सुनने से सुनने वाला भी शब्द रूप, नाम रूप हो जाता है।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे कि हर आदमी यह काम कर सकता है। जो काम एक आदमी कर सकता है वही काम दूसरा आदमी भी कर सकता है फिर वे कहा करते थे कि आज का काम कल पर न छोड़ें, रोज-रोज अभ्यास करें। अभ्यास करने से महारत पैदा हो जाती है।

✻✻✻

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

संभाल

मैंने अपने सतगुरु के अनेकों वाकिया देखे हैं कि जिसने चलती हुई कार में भी उनके दर्शन किए, उन्होंने उसकी भी **संभाल** की। आपने कई बार सतसंग में भाई हरनाम सिंह की कहानी सुनी है कि किस तरह उसे अबोहर में महाराज जी के दर्शन हुए। वह शराब–मीट खाता था और बेचता भी था लेकिन दर्शनों की ऐसी खींच हुई कि उसने सब कुछ छोड़ दिया। हरनाम सिंह को तो किसी ने उपदेश भी नहीं दिया था।

हरनाम सिंह ने मेरे पास आकर महाराज जी की प्रशंसा की। उसने मेरे खेत में ही चोला छोड़ा और बताया कि मेरी **संभाल** करने वाला जहाज लेकर आ गया है। यह हरनाम सिंह की ही भविष्यवाणी थी कि वह ताकत एक साल बाद यहाँ आएगी। इसलिए आप कहते हैंः ***जिनी डिठा तिना लए छडाइ।***

दुनिया पलट जाए लेकिन गुरु नानकदेव जी की बानी के लफ्ज नहीं पलटते। सन्तों की बानी सच लिखी होती है। गुरु साहब कहते हैंः

नानक दासु मुख ते जो बोलै ईहा ऊहा सचु होवै।

गुरु अमरदास जी महाराज विनती करते हैं कि जिन्होंने इस तरह नाम की कमाई की कि वे नाम रूप हो गए, मुझे उनकी संगत बक्शें। जिनमें यह ताकत है कि उन्हें देखने से ही हम यमों से बच जाते हैं क्योंकि संगत का बहुत महत्व है। गुरु साहब ने कहा थाः

सची बैसक तिन्ना संगि जिन संगि जपीऐ नाउ।।
तिन्न संगि संगु न कीचई नानक जिना आपणा सुआउ।।

जिन्होंने नाम की कमाई की है घड़ी दो घड़ी उनकी संगत करना अच्छा है। आप परमात्मा के आगे विनती करते हैं कि आप हमें उनकी संगत दें ताकि हम उनका स्वरूप अपने अंदर बसा लें। ***

धन्य अजायब

सन् 2026 में 16 पी.एस.आश्रम राजस्थान में सतसंगों के कार्यक्रम :

1. 04 फरवरी से 08 फरवरी
2. 27, 28 फरवरी व 01 मार्च
3. 01 अप्रैल से 05 अप्रैल
4. 07 सितम्बर से 12 सितम्बर
5. 02 अक्टूबर से 04 अक्टूबर
6. 30, 31 अक्टूबर व 01 नवम्बर
7. 04 दिसम्बर से 06 दिसम्बर

RNI No - RAJHIN/2003/9899

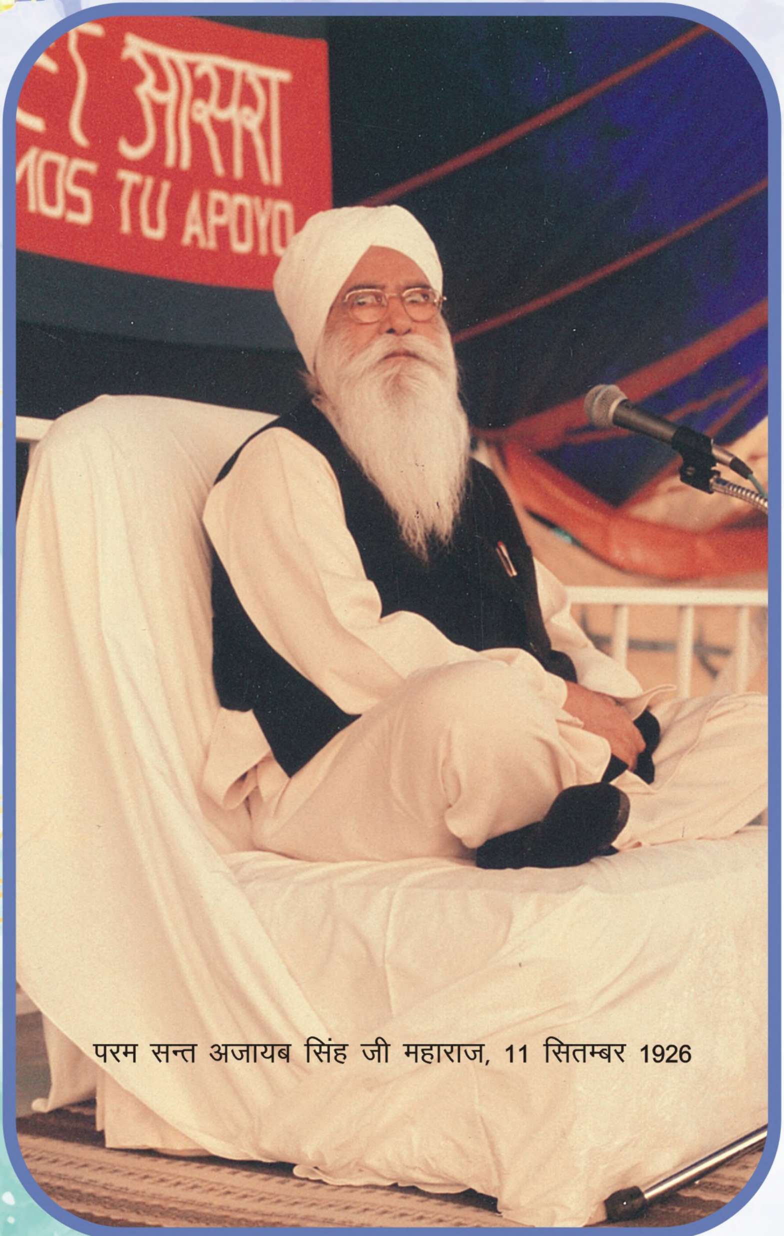

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज, 11 सितम्बर 1926

परमात्मा ने आपके ऊपर बहुत उपकार किए हैं जो बयान नहीं किए जा सकते। आप उन उपकारों को भूलें नहीं। परमात्मा का धन्यवाद करने का और परमात्मा से माफी माँगने का एक ही तरीका है कि आप परमात्मा की भक्ति करें।